Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 2

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 17

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

27 अप्रैल 2017 ई 6 रजब 1438 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

तुम सच्चे दिल, पूर्ण सच्चाई और लगन से ख़ुदा के मित्र बन जाओ ताकि वह भी तुम्हारा मित्र बन जाए।

तुम अपने अधीन काम करने वालों, अपनी पत्नियों और अपने ग़रीब भाइयों पर दया करो ताकि आकाश पर तुम पर भी दया हो।

यदि कोई शक्ति रखे तो ख़ुदा पर निर्भर रहने का स्थान सर्वश्रेष्ठ है।

उपदेश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं

"कुकर्मी ख़ुदा के निकट नहीं हो सकता, अभिमानी उसके निकट नहीं हो सकता, अत्याचारी उसके निकट नहीं हो सकता,धरोहर को हड़प जाने वाला उसके निकट नहीं हो सकता और प्रत्येक जो उसके नाम के लिए मर मिटने वाला नहीं उसके निकट नहीं हो सकता, वे जो भौतिक साधनों पर कुत्तों, चीलों और गिद्दों की भांति टूट पड़ते हैं वे सांसारिक भोग-विलास में लीन हैं वे ख़ुदा के निकट नहीं हो सकते। प्रत्येक अपवित्र दृष्टि उस से परे है, प्रत्येक अपवित्र हृदय उस से बे ख़बर है। वह जो उसके लिए अग्नि में है उसे अग्नि से मुक्ति दी जाएगी, वह जो उसके लिए रोता है वह हंसेगा, वह जो उसके लिए संसार से विरक्त होता है वह उसे प्राप्त होगा। तुम सच्चे दिल, पूर्ण सच्चाई और लगन से ख़ुदा के मित्र बन जाओ ताकि वह भी तुम्हारा मित्र बन जाए। तुम अपने अधीन काम करने वालों, अपनी पत्नियों और अपने ग़रीब भाइयों पर दया करो ताकि आकाश पर तुम पर भी दया हो। तुम वास्तव में उसके हो जाओ ताकि वह भी तुम्हारा हो जाए। संसार सहस्त्रों विपत्तियों का स्थान है जिनमें से एक प्लेग भी है। अत: तुम ख़ुदा से सच्चा सम्बन्ध स्थापित करो ताकि वह यह विपत्तियाँ तुम से दूर रखे। कोई विपत्ति या संकट धरती पर नहीं आता जब तक आकाश से आदेश न हो। कोई संकट दूर नहीं होता जब तक आकाश से कृपा न हो। अत: आपकी बुद्धिमत्ता इसी में है कि तुम जड़ को पकड़ो न कि शाखा को। तुम्हें औषधि और उपाय से रोका नहीं है, हां उन पर निर्भर रहने से रोका है । अन्तत: वही होगा जो उसकी इच्छा के अनुकूल होगा। यदि कोई शक्ति रखे तो ख़ुदा पर निर्भर रहने का स्थान सर्वश्रेष्ठ है। तुम्हारे लिए एक अनिवार्य शिक्षा यह है कि क़ुर्आन शरीफ़ को अलग-थलग न डाल दो कि उसी में तुम्हारा जीवन निहित है। जो लोग क़ुर्आन को सम्मान देंगे वे आकाश पर सम्मानित किए जाएँगे। जो लोग हर हदीस और हर वाणी पर क़ुर्आन को प्राथमिकता देंगे उनको आकाश पर प्राथमिकता प्रदान की जाएगी । समस्त मानव जाति के लिए सम्पूर्ण धरती पर अब क़ुर्आन के अतिरिक्त कोई पुस्तक नहीं और न ही हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सिवा कोई रसूल और सिफ़ारिश करने वाला। अत: तुम प्रयास करो कि सच्चा प्रेम इस प्रभुत्वशाली नबी के साथ हो। उस पर किसी अन्य को किसी भी प्रकार की श्रेष्ठता न दो, ताकि आकाश पर तुम्हारा नाम मुक्ति प्राप्त लोगों में लिखा जाए। स्मरण रहे कि मुक्ति कोई ऐसी वस्तु नहीं जो मरणोपरान्त प्रकट होगी अपितु वास्तविक मुक्ति वह है जो इसी सँसार में अपना प्रकाश दिखलाती है। मुक्ति प्राप्त मनुष्य कौन है ? वह जो विश्वास रखता है कि ख़ुदा एक वास्तविक सत्य है और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसके और उसकी प्रजा के मध्य सिफ़ारिश करने वाले हैं। आकाश के नीचे उनके समान न कोई अन्य रसूल है और न क़ुर्आन के समान कोई अन्य पुस्तक है। ख़ुदा ने किसी के लिए न चाहा कि वह सदा जीवित रहे परन्तु यह ख़ुदा की ओर से आया हुआ नबी सदा के लिए जीवित है, और ख़ुदा ने उसके सदा जीवित रहने की नीव इस प्रकार रखी है कि उसकी शरीअत और आध्यात्मिक उपलब्धियों को प्रलय तक जारी रखा और अन्तत: उसकी आध्यात्मिक उपलब्धियों से इस मसीह मौऊद को संसार में भेजा, जिसका आना इस्लामी इमारत को पूर्ण करने के लिए आवश्यक था। अनिवार्य था कि यह संसार उस समय तक समाप्त न हो जब तक कि मुहम्मदी धारा के लिए एक मसीह आध्यात्मिक रूप में न दिया जाता, जैसा कि मूसा की धारा के लिए दिया गया था। यह आयत इसी ओर सँकेत करती है कि-

इहदिनस्सिरातल मुस्तक़ीमा सिरातल्लज़ीना अनअमता अलैहिम (अलफ़ातिहा)

मूसा ने वह कुछ प्राप्त किया जिसे प्राचीन पीढ़ियां खो चुकी थीं, और हज़रत मुहम्मद साहिब ने वह सब कुछ पाया जिसको मूसा की क़ौम खो चुकी थी। अब मुहम्मदी धारा मूसवी धारा की उत्तराधिकारी है पर प्रतिष्ठा में हज़ारों गुना बढ़कर। मसीले मूसा मूसा से बढ़कर और मसीले इब्ने मरयम इब्ने मरयम से बढ़कर और वह मसीह मौऊद न केवल समय के लिहाज़ से हज़रत मुहम्मद साहिब के बाद चौदहवीं शताब्दी में आया था बल्कि उसका प्रादुर्भाव ऐसे समय में हुआ जबकि मुसलमानों का वैसा ही हाल था जैसा कि मसीह इब्ने मरयम के प्रादुर्भाव के समय यहूदियों का। अत: वह मैं ही हूँ ।"

(कश्ती नूह, रूहानी खज़ायन,भाग 19, पृष्ठ 13 -14)

☆ ☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जीवनी तथा संक्षिप्त इतिहास एवं धार्मिक सेवाऐं (भाग-5)

अनुवादक : शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री, कादियान

मीनारतुल मसीह

28 मई 1900 ई. को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की एक हदीस के संकेत के अनुसार क़ादियान की मस्जिद अक़्सा में एक मीनार निर्माण करने की प्रेरणा दी। अत: इस उद्देश्य से चन्दा इकट्ठा होना आरम्भ हो गया। आख़िर 1903 ई. में हज़ूर ने इस मीनार की नींव रखी। परन्तु इसके बाद आर्थिक कठिनाइयों के कारण यह काम बंद हो गया। फिर अन्तत: हज़रत ख़लीफ़तुल मसीहिस्सानी रज़ियल्लाहो अन्हो के समय में 1914 में इसके निर्माण का कार्य फिर आरम्भ किया गया तथा दिसम्बर 1916 में यह सम्पूर्ण हो गया।

मुसलमान फ़िर्क़ा अहमदिया

1901 ई. में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक विज्ञापन द्वारा अपनी जमाअत का नाम ''मुसलमान फ़िर्क़ा अहमदिया'' रखने का निर्णय किया अत: उस समय से हमारी जमाअत, जमाअत अहमदिया कहलाती है तथा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानने वाले अहमदी कहलाते हैं ।

हज़रत साहिबज़ादा सय्यद अब्दुल लतीफ़ साहिब शहीद

हज़रत साहिबज़ादा सय्यद अब्दुल लतीफ़ साहिब रज़ियल्लाहो अन्हो अफ़ग़ानिस्तान के ख़ोस्त प्रदेश के रहने वाले एक बहुत बड़े बुज़ुर्ग थे। उनके हज़ारों मुरीद (चेले) थे। उन की प्रसिद्धि तथा बुज़ुर्गी का यह हाल था कि अफ़ग़ानिस्तान के शासक हबीबुल्लाह ख़ान (क़ाबुल के अध्यक्ष) ने राज्याभिषेक के अवसर पर पगड़ी की रसम पूरी करने के लिए उन्हें ही बुलाया था। आप को किसी के द्वारा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की कुछ पुस्तकें मिल गईं। उन्हें पढ़ने का अवसर मिला। जिन से आप बहुत प्रभावित हुए । 1902 ई. में आप हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दर्शन करने के लिए क़ादियान पधारे । हुज़ूर को देखते ही ईमान ले आए। तथा हुज़ूर की संगति में इतने लीन हो गए कि कई महीनों तक क़ादियान में ही रहे। क़ादियान में आपको कई बार एक इल्हाम (ईशवाणी) हुआ जिसका मतलब यह था कि तू अहमदियत के लिए अपने आप को क़ुर्बान करने के लिए तैयार हो जा।

आख़िर हुज़ूर की आज्ञा से वतन पधार गए जब हबीबुल्लाह ख़ान काबुल के अध्यक्ष को यह पता लगा कि आप अहमदी हो गए हैं तो उसने आपको बंदी बना लिया। चार मास तक आप क़ैद में रहे। इस समय में काबुल के अध्यक्ष तथा अन्य लोगों ने हर संभव प्रयत्न किया कि किसी प्रकार आप अहमदिय्यत को छोड़ दें। परन्तु आपने फ़र्माया जिसे मैं ने सत्य समझा है उसे मैं कैसे छोड़ दूँ ? आख़िर काबुल के मौलवियों ने आप पर काफ़िर हो जाने का फ़त्वा लगा दिया तथा काबुल के शासक ने आपको संगसार करने (पत्थरों के द्वारा शहीद करने) का आदेश दिया। 14 जुलाई 1903 ई. को जब आपको संगसार किया जाने लगा तो उस समय फिर आपको कहा गया कि यदि एक बार ही आप अपने अहमदी होने से इंकार कर दें तो आप बच सकते हैं। पर शहीद मरहूम ने फ़र्माया मेरी तथा मेरे बाल बच्चों की भला क्या हक़ीक़त है। मैं उन्हें बचाने के लिए अपने ईमान को कदापि नहीं छोड़ सकता। इस पर आपको कमर तक धरती में गाड़ दिया गया। तथा ऊपर से आप पर पत्थरों की बोछाड़ आरम्भ कर दी गई। यहाँ तक कि हज़रत साहिबज़ादा सय्यद अब्दुल लतीफ़ साहिब शहीद मरहूम की पवित्र रूह अपने मौला के पास जा पहुँची इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहे राजेऊन।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हज़रत साहिबज़ादा साहिब रज़ियल्लाहो अन्हो की शहादत का वर्णन करते हुए फ़र्माया है :-

''हे अब्दुल लतीफ़ ! तेरे पर हज़ारों रहमतें कि तू ने मेरे जीवन में ही अपने सिद्क़ (सच्चाई) का नमूना दिखाया... यह ख़ून बड़ी बेरहमी (निर्दयता) के साथ किया गया है तथा आकाश के नीचे ऐसे ख़ून का उदाहरण नहीं मिलेगा। हाए ! इस नासमझ अमीर (सरदार) ने क्या किया कि ऐसे मासूम व्यक्ति को अत्यन्त बेदर्दी (निदर्यता) से क़त्ल कर के अपने आप को तबाह कर लिया।''

(तज़किरतुश्शहादतैन)

जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने लिखा है इस महा अत्याचार के कारण वस्तुत: सरदार हबीबुल्लाह ख़ान तथा उसका ख़ानदान तबह हो गया। अत: सरदार हबीबुल्लाह ख़ान तथा उसका लड़का नसरुल्लाह ख़ान दोनों क़त्ल किए गए। तथा इसके बाद यह ख़ानदान सदा के लिए हकूमत से वंचित हो कर देशनिकाला की सज़ा पा कर जीवन व्यतीत करने लगा।

शहीद मरहूम रज़ियल्लाहो अन्हो की संगसारी के दूसरे ही दिन काबुल में हैज़ा फूट पड़ा जिस के कारण शाही ख़ानदान के तथा कई हज़ार व्यक्ति हलाक हो गए ।

मदरसा अहमदिया का आरम्भ

1905 ई. में जमाअत अहमदिया के दो बहुत बड़े ज्ञानी तथा बुज़ुर्ग अर्थात हज़रत मौलवी अब्दुल करीम साहिब स्यालकोटी रज़ियल्लाहो अन्हो तथा हज़रत मौलवी बुरहानुद्दीन साहिब जेहलमी रज़ियल्लाहो अन्हो स्वर्ग सिधार गए । जिसके कारण हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को यह ध्यान आया कि पुराने विद्वानों का स्थान लेने के लिए नए विद्वान तैयार करने चाहिए। अत: इस के लिए जमाअत के परामर्श से यह प्रबन्ध किया गया कि तालीमुल इस्लाम हाई स्कूल के साथ ही दीनियात (धर्म सम्बंधी) मदरसा की एक अलग शाख़ा स्थापित कर दी गई।

कांगड़ा का भूँचाल

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को इल्हाम हुआ कि ''अफ़तिद्दियारो महिल्लुहा व मुक़ामुहा'' । अर्थात शीघ्र ही ऐसी तबाही आने वाली है जिससे निवास के अस्थाई तथा स्थाई स्थान दोनों तबाह हो जाएँगे। अत: इस इल्हाम के अनुसार 4 अप्रैल 1905 ई. को एक भयानक भूचाल आया जो कांगड़ा के भूचाल के नाम से प्रसिद्ध है । इस से काँगड़े के प्रदेश में हज़ारों मकान गिर गए तथा अत्यन्त तबाही आई।

वफ़ात के बारे इल्हाम तथा ख़िलाफ़त की भविष्यवाणी

1905 ई. के अन्त में हुज़ूर को लगातार ऐसे इल्हामात हुए जिनसे यह ज्ञात होता था कि आपकी वफ़ात (मृत्यु) का समय समीप आ रहा है। अत: आपको दो तीन घूंट पानी दिखाया गया तथा साथ ही इल्हाम हुआ कि ''आबे ज़िन्दगी''। अर्थात दो तीन वर्ष ही अब जीवन के शेष हैं। फिर इल्हाम हुआ ''क़रोब अजलोकल मुक़द्दर'' । अर्थात तेरी मृत्यु का समय समीप है। इस पर हुज़ूर ने अपनी जमाअत को उपदेश देने के लिए एक पुस्तिका ''अल्-वसिय्यत'' के नाम से लिखी जिसमें जमाअत को आवश्यक नसीहतें (सदुपदेश) फ़र्माईं तथा फिर यह लिखा कि नबी मामूर (अवतार जो भेजा गया) के द्वारा अल्लाह तआला पहले अपनी क़ुदरत प्रकट करता है तथा उनकी मृत्यु के बाद ख़िलाफ़त स्थापित करके अल्लाह तआला दूसरी बार अपनी शक्तिशाली क़ुदरत प्रकट करता है। अत: नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के समय में भी ऐसा ही हुआ तथा अब भी ऐसा होगा। अत: हुज़ूर ने फ़र्माया :-

''तुम मेरी इस बात से जो मैं ने तुम्हारे पास बयान की है (अर्थात शीघ्र मृत्यु पा जाने की ख़बर, -अनुलेखक) दु:खी मत हो। तथा तुम्हारे दिल परेशान न हो जाएँ। क्योंकि तुम्हारे लिए दूसरी क़ुदरत (अर्थात ख़िलाफ़त, अनुलेखक) का देखना भी ज़रूरी है।''

अर्थात जब हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने अपनी मृत्यु की भविष्यवाणी फ़र्माई तो साथ ही जमाअत को ख़िलाफ़त के स्थापित होने की शुभसूचना भी दे दी तथा बताया कि अल्लाह तआला मेरी मृत्यु के बाद ख़िलाफ़त द्वारा जमाअत की रक्षा तथा उन्नति का प्रबन्ध फ़र्माएगा।

मक़बरा बहिश्ती

पुस्तिका अलवसिय्यत में हुज़ूर ने अल्लाह तआला की एक शुभ सूचना तथा उसके इल्हाम के अनुसार मक़बरा बहिश्ती बनाने की भी घोषणा फ़र्माई। अल्लाह तआला ने हुज़ूर को स्वप्न में एक स्थान दिखाया था जिसका नाम बहिश्ती मक़बरा था तथा यह बताया गया था कि यह उन अहमदियों की क़बरें

शेष पृष्ठ 7 पर

ख़ुत्बः जुमअः

23 मार्च जमाअत अहमदिया के इतिहास में बड़ा महत्त्वपूर्ण दिन है क्योंकि इस दिन हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद कादियानी अलैहिस्सलाम ने जमाअत अहमदिया की नियमित बैअत के माध्यम से नींव रखी। आपने फरमाया कि आने वाला मसीह मौऊद और महदी मौऊद जिसके आने की आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़बर दी थी वह मैं हूँ। आपने फरमाया कि मैं इसलिए भेजा गया हूँ ताकि तौहीद की स्थापना करके अल्लाह तआला की मुहब्बत को दिलों में पैदा करूं। फिर आप ने फरमाया कि यह स्थान और सम्मान मुझे आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पालन और आप से सच्चे इश्क की वजह से मिला है।

ज़ालिम हैं वे लोग जो कहते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आप के मानने वाले नऊज़ो बिल्लाह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के स्थान से आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के स्थान को कम करते हैं

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेशों और आप की सीरत की घटनाओं से आप की अल्लाह तआला से मुहब्बत, इश्के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और मानव जाति से सहानुभूति का ईमान वर्धक वर्णन और इस बारे में जमाअत के लोगों को उन की जिम्मेदारियों के अदा करने की तरफ ध्यान दिलाने का उपदेश।

ये बातें सुनकर जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर आपत्ति करता है वह ज़ालिम और जाहिल और कुत्सित है इसके अलावा कुछ नहीं कहा जा सकता। उनका मामला अब ख़ुदा तआला पर है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बेसत का उद्देश्य जहां तौहीद की स्थापना और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के स्थान और सम्मान को स्पष्ट कर के दुनिया को अपने झंडे तले लाना था वहाँ बन्दों के अधिकार अदा करना और अल्लाह तआला की सृष्टि पर करूणा की पहचान कराना और उस पर अमल करवाना भी था।

आप के मिशन को ख़त्म करने के लिए बहुत सारे मुसलमान उलेमा ने कोशिशें कीं असंख्य तथाकथित विद्वानों ने आप का विरोध किया आप पर कुफ्र के फतवे लगाए और अब तक लगाते चले आ रहे हैं। इसी का नतीजा है कि दुनिया के विभिन्न देशों में मुस्लिम देशों में विरोध होता है। इस हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की शिक्षा का हम पर प्रभाव है कि आज भी हम उनके विरोधियों के जवाब में उनके ख़िलाफ नैतिक मानकों को नहीं छोड़ते और कानून को भी अपने हाथ में नहीं लेते। काश उन को समझ आ जाए कि इस ज़माने के हकम औरअदल और मसीह और महदी हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद कादियानी अलैहिस्सलाम ही हैं और इस्लाम के प्रकाशन और तौहीद की स्थापना और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वास्तविक हुकूमत जो दिलों में स्थापित होनी है धरती पर नहीं दिलों पर स्थापित होनी है वह मसीह मौऊद के माध्यम से ही स्थापित होनी है और आप की जमाअत के माध्यम से ही स्थापित होनी है न कि किसी तलवार या बंदूक या शक्ति या आतंकवाद फैलाने और इस्लाम के नाम पर मज़लूमों की हत्या करने से।

यूरोप में जो घटनाएँ इस्लाम के नाम पर लोगों हो रही हैं या संगठन कर रहे हैं या यहाँ लंदन में दो दिन पहले क्रूर रूप में मासूमों की हत्या की गई है। राह चलते राह वालों पर कार चढ़ा दी एक पुलिस वाले को मार डाला। यह इसलिए है कि इन तथाकथित विद्वानों ने लोगों का ग़लत मार्गदर्शन करके उनके दिल में बजाय इस्लाम की सुंदर शिक्षा डालने के अत्याचार और बर्बरता के विचार पैदा कर दिए हैं।

हत्याओं की मासूमों को मारने की हरकतों को हम ने दृढ़ता से हर जगह रद्द करना है इसके ख़िलाफ आवाज़ उठानी चाहिए और पीड़ितों से सहानुभूति करना भी हमारा काम है।

अल्लाह तआला के मसीह का लगाया हुआ यह बीज अल्लाह तआला की कृपा से फल फूल और बढ़ रहा है। हम ने अगर उसकी हरी शाखाएं बनना है तो हमारा काम है कि जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के लेखनों और कर्म से प्रमाणित है हम अल्लाह तआला से मुहब्बत आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से प्रेम और अपने कर्मों और मानव जाति से सहानुभूति और प्यार को इस तरह बनाएं कि हमारे हर कर्म से यह दिखे। अल्लाह तआला हमें इसकी तौफीक प्रदान करे।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़,
दिनांक 24 मार्च 2017 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ ۔

कल 23 मार्च थी और 23 मार्च जमाअत अहमदिया के इतिहास में बड़ा महत्त्वपूर्ण दिन है क्योंकि इस दिन हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद कादियानी अलैहिस्सलाम ने जमाअत अहमदिया की नियमित बैअत के माध्यम से नींव रखी। आपने फरमाया कि आने वाला मसीह मौऊद और महदी मौऊद जिसके आने की आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़बर दी थी वह मैं हूँ। आपने फरमाया कि मैं इसलिए भेजा गया हूँ ताकि तौहीद की स्थापना करके अल्लाह तआला की मुहब्बत को दिलों में पैदा करूं।

आपने फरमाया कि "ख़ुदा तआला चाहता है कि उन समस्त रूहों को जो पृथ्वी की विविध आबादी में बसी हैं क्या यूरोप और क्या एशिया उन सब जो नेक प्रकृति रखते हैं एकेश्वरवाद की ओर खींचे और अपने बन्दों को एक धर्म पर इकट्ठा करे यही ख़ुदा तआला उद्देश्य है जिसके लिए मैं दुनिया में भेजा गया हूँ अत: तुम इस लक्ष्य का पीछा करो मगर नरमी और नैतिकता और दुआ पर ज़ोर देने से।"

(रसाला अल्वसय्यित रूहानी ख़ज़ायन भाग 20 पृष्ठ 306-307)

फिर आप ने फरमाया कि यह स्थान और सम्मान मुझे आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पालन और आप से सच्चे इश्क की वजह से मिला है इसलिए दुनिया के लिए यह संदेश है कि रसूल से मुहब्बत करो और उसका अनुकरण करो। इससे ख़ुदा तआला से भी संबंध स्थापित हो जाएगा और वास्तविक तौहीद वाला

बन सकोगे।

आप फरमाते हैं कि "समस्त मानव जाति के लिए अब कोई रसूल और शफी नहीं मगर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम। अत: कोशिश करो कि सच्ची मुहब्बत इस प्रताप वाले नबी के साथ रखो और इस के अतिरिक्त दूसरे को उस पर किसी प्रकार की बड़ाई मत दो ताकि आसमान पर तुम मुक्ति वाले लिखे जाओ और याद रखो मुक्ति वह बात नहीं जो मरने के बाद प्रकट होगी बल्कि वास्तविक मुक्ति वह है कि इस दुनिया में अपनी रोशनी दिखलाती है। मुक्ति प्राप्त करने वाला कौन है? वह जो विश्वास रखता है कि ख़ुदा सच है और मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसमें और सभी प्राणियों के मध्य शफी है और आकाश के नीचे न उसके बराबर कोई और रसूल है और न कुरआन के बराबर और कोई किताब है और किसी के लिए ख़ुदा ने न चाहा कि वह हमेशा जीवित रहे, मगर यह चुना हुआ नबी हमेशा के लिए जीवित है।"

(कश्ती नूह रूहानी ख़ज़ायन भाग 19 पृष्ठ 306-307)

यह है वह स्थान और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुहब्बत जिसकी आप ने हमेशा भरपूर अभिव्यक्ति की और अपने मानने वालों को भी इस बात की हिदायत की कि वह मुहब्बत और स्थान को अपने सामने रखें। ज़ालिम हैं वे लोग जो कहते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आप के मानने वाले नऊज़ो बिल्लाह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के स्थान से आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के स्थान को कम करते हैं और आजकल अल्जीरिया में भी अहमदियों पर यह आरोप लगाया जा रहा है और आरोप लगाकर उन्हें जेल में डाला जा रहा है। यहां तक कि अब महिलाओं पर भी उन्होंने हाथ डालने शुरू कर दिए हैं उन पर मुकदमे करने शुरू कर दिए हैं। कई कई घंटे सफर करवा कर दूध पीते कुछ महीनों के बच्चों के साथ महिलाओं को अन्य शहरों में ले जाया जाता है और मुकदमा किया जाता है और जेल में डाल दिया जाता है लेकिन महिलाएं भी मुझे यही संदेश भिजवा रही हैं कि हम ने मसीह मौऊद को माना है उसके मानने के बाद ही हमें वास्तविक तौहीद और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के स्थान और महिमा और आप से सच्ची मुहब्बत की सच्चाई पता चली है। हम कैसे अपने ईमान से पीछे हट सकती हैं।

जहां हम यह दुआ करते हैं कि अल्लाह तआला उन अहमदियों के लिए आसानियां पैदा करे वहाँ हमारी यह भी दुआ है कि अल्लाह तआला मुसलमानों को आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे आशिक को मानने की तौफीक़ प्रदान करे। वह जो अल्लाह के वादे के अनुसार तौहीद की स्थापना और इस्लाम के पुनर्जागरण के लिए आया था। अल्लाह तआला से मुहब्बत और तौहीद की स्थापना के लिए अपनी तड़प की एक झलक आप के इन शब्दों से मिलती है।

आप अल्लाह तआला को संबोधित करके कहते हैं कि

"देख मेरी रूह बहुत धैर्य के साथ तेरी ओर ऐसे उड़ रही है जैसा कि पक्षी अपने घौंसले की तरफ आता है अत: मैं तेरे सामर्थ्य के निशान का इच्छुक हूँ, लेकिन न अपने लिए न अपनी इज्ज़त के लिए बल्कि इसलिए कि लोग तुझे पहचानें और तेरी पवित्र राहों को अपनाएं और जिसे तूने भेजा है उसकी तक़ज़ीब करके हिदायत से दूर न जा पड़ें।" फरमाया "मैं गवाही देता हूँ कि तूने मुझे भेजा है और मेरी समर्थन में बड़े बड़े चिन्ह दिखाए हैं यहाँ तक कि सूर्य और चंद्रमा को आदेश दिया कि वह रमज़ान में भविष्यवाणी की तारीखों के अनुसार ग्रहण में आऐं।..... मैं तुझे पहचानता हूँ कि तू मेरा ख़ुदा है और इसलिए मेरी रूह तेरे नाम से ऐसी उछलती है जैसा कि दूध पीने वाला बच्चा माँ के देखने से लेकिन अक्सर लोगों ने मुझे नहीं पहचाना और न स्वीकार किया।"

(तिरयाकुल कुलूब ख़ज़ायन भाग 15 पृष्ठ 511)

इस बात से जहां आप अलैहिस्सलाम की अल्लाह तआला से मुहब्बत और उसकी महानता स्थापित करने के लिए तड़प दिखती है वहाँ मानवता को बचाने के लिए व्याकुलता की भी गंभीर अभिव्यक्ति दिखाई देती है और क्यों न हों आप ही तो अंतिम समय में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी में अल्लाह तआला की मुहब्बत दिलों में स्थापित करने वाले और ख़ुद न केवल स्थापित करने वाले हैं और ख़ुद भी अल्लाह तआला के प्यार में डूबे हुए थे। आप को कितनी तड़प थी कि यह अल्लाह तआला से इश्क और मुहब्बत की चिंगारी दूसरों के दिलों में भी पैदा हो जाए। इस बारे में आप फरमाते हैं।

क्या बदबख़्त वह व्यक्ति है जिसे अभी तक यह नहीं पता कि इस का एक ख़ुदा है जो हर एक चीज़ पर क़ादिर है हमारा स्वर्ग हमारा ख़ुदा है हमारे उच्च सुख हमारे ख़ुदा हैं क्योंकि हम ने उसे देखा और प्रत्येक ख़ूबसूरती उसमें पाई। यह धन लेने के योग्य है, यहां तक कि जान देने से मिले और यह माणिक्य खरीदने योग्य है हालांकि सारा अस्तित्व खोने से प्राप्त हो। हे वंचितो! इस स्रोत की तरफ दोड़ो कि वह तुम्हें सिंचित करेगा यह जीवन का स्रोत है जो तुम्हें बचाएगा। मैं क्या करूँ और कैसे इस सुसमाचार को दिल में बिठा दूं। किस दफ मैं बाजारों में प्रचार करूं कि तुम्हारा यह ख़ुदा है ताकि लोग सुन लें और किस दवा से इलाज करते ताकि सुनने के लिए लोगों के कान खुलें।

(कश्ती नूह रूहानी ख़ज़ायन भाग 19 पृष्ठ 21-22)

इन शब्दों की तह में अत: कितना दर्द है। बल्कि कहना चाहिए कि हर एक शब्द में दर्द के कई पहलू छुपे हुए हैं। प्रत्येक शब्द के कई परत हैं और प्रत्येक परत में दर्द है और उनकी गहराई में प्रत्येक अपनी समझ और धारणा के संदर्भ में जा सकता है लेकिन जिस हद तक भी कोई अपनी क्षमता के अनुसार पहुंचेगा रूहानियत में असाधारण ऊंचाई और असाधारण तरक्की करने वाला होगा। फिर ख़ुदा तआला की इबादत और ख़ुदा तआला से मुहब्बत की नसीहत करते हुए आप फरमाते हैं कि

"अगर तुम ख़ुदा के हो जाओगे तो निश्चय जान लो कि ख़ुदा तुम्हारा ही है तुम सोए हुए होगे और ख़ुदा तआला तुम्हारे लिए जागेगा तुम दुश्मन से असावधान होगे और ख़ुदा उसे देखेगा और उस की परियोजना को तोड़ेगा तुम अब तक नहीं जानते कि तुम्हारे ख़ुदा में क्या कुदरतें हैं और यदि तुम जानते तो तुम पर कोई ऐसा दिन नहीं आता कि तुम दुनिया के लिए सख्त दुखी हो जाते एक व्यक्ति जो एक ख़ज़ाना अपने पास रखता है क्या वह एक पैसा बर्बाद होने से रोता है और चीख़ें मारता है और मरने लगता है तो अगर तुम को इस ख़ज़ाना की सूचना होती कि ख़ुदा तुम्हारी हर एक आवश्यकता के समय काम आने वाला है तो तुम दुनिया के लिए ऐसे व्याकुल क्यों होते। ख़ुदा एक प्यारा ख़ज़ाना है उसका सम्मान करो कि वह तम्हारे हर कदम में तुम्हारा मददगार है। तुम बिना उस के कुछ भी नहीं है और न तुम्हारे कारण और उपाय कुछ चीज़ हैं।" फरमाते हैं कि "अन्य जातियों का अनुसरण न करो कि जो पूर्ण रूप से माध्यमों पर गिर गई हैं।" (दुनियादारी और भौतिकवाद के अतिरिक्त उन में कुछ भी नहीं।) "और जैसे सांप मिट्टी खाता है उन्होंने सांसारिक माध्यमों की मिट्टी खाई। और जैसे गिद्ध और कुत्ते मुर्दा खाते हैं उन्होंने मुर्दा पर दांत मारे वह ख़ुदा से बहुत दूर जा पड़े.....।"

फरमाया कि "मैं तुम्हें सीमा तक सांसारिक माध्यमों के प्रयोग से मना नहीं करता।" (काम करने से चीज़ों से लाभ उठाने से, भौतिक चीज़ों के इस्तेमाल से मना नहीं करता।) बल्कि इससे मना करता हूँ कि तुम अन्य जातियों की तरह केवल माध्यमों के ग़ुलाम हो जाओ और ख़ुदा को भूल जाओ जो माध्यम को भी वही उपलब्ध करता है।" (यह संसाधन जो हैं, जो भौतिक चीजें हैं यह वही प्रदान करता है उन पर न गिरो बल्कि ख़ुदा की तरफ देखो जो ये चीज़े प्रस्तुत करता है) फरमाया कि "तुम्हें अगर आँख हो तो तुम्हें नज़र आ जाए कि ख़ुदा ही ख़ुदा है और सब तुच्छ है।"

(कश्ती नूह रूहानी ख़ज़ायन भाग 19 पृष्ठ 21-22)

अत: यह संबंध है ख़ुदा तआला से जो हम ने हासिल करना और स्थापित करना है जो आप अपने अनुयायियों से चाहते हैं कि यह गुणवत्ता प्राप्त हो।

जैसा कि मैं अभी उल्लेख कर चुका हूँ कि तौहीद की स्थापना और इस्लाम के पुनर्जागरण का काम आप अलैहिस्सलाम को आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पालन और आप से प्यार और इश्क की वजह से मिला। इस इश्क-मोहब्बत के नज़ारे हमें आप की हस्ती में कैसे दिखते हैं उसकी असंख्य घटनाएं हैं।

एक घटना को रिवायत करने वाला बयान करता है कि एक बार आप मस्जिद मुबारक में अकेले टहल रहे थे और कुछ गुनगुना रहे थे और साथ ही आप की आंखों से आंसू बह रहे थे। जब उस व्यक्ति ने पूछा कि कौन सा सदमा हुज़ूर को पहुंचा है? तो आप ने फ़रमाया कि हज़रत हस्सान बिन साबित का यह शेर पढ़ रहा था जो उन्होंने आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मृत्यु पर फरमाया था। शेर है

कुन्तस्सवादो ले नाज़री फ अमीया अलैकन्नाज़िरो
मन शाअ बअदका फलयमुत फ अलैक कन्तु उहाज़िरो

अर्थात हे ख़ुदा के प्यारे रसूल! तू मेरी आंख की पुतली था जो आज तेरी मृत्यु के कारण अंधी हो गई है। अब तेरे बाद जो चाहे मरे मुझे तो तेरी मौत का डर था जो घटित हो गई। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया मैं यह शेर जब पढ़ रहा था तो मेरे मन में यह इच्छा पैदा हुई कि काश यह शेर मेरी ज़बान से निकलते। यह शेर पढ़ते हुए आप की आंखों से अपार आँसुओं का निकलना आप के दिल की स्थिति का हाल बता रही थी। अत: वे लोग इस इश्क और प्यार की अभिव्यक्ति

के पास भी कहां पहुँच सकते हैं जो आप पर आरोप लगाते हैं कि नऊज़ो बिल्लाह आप ने अपने आप को आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के स्थान से उच्च दर्जा दिया हुआ है।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहो अन्हो ने आप की इस भावनात्मक स्थिति की जो स्थिति थी उसका बड़ा दर्द के तरीके से इस तरह नक्शा खींचा है कि वह व्यक्ति जिसने हर प्रकार की कठोरता और तंगी का सामना किया जिस पर विरोधों की असंख्य आंधियां चलीं असंख्य तकलीफों और कष्टों से गुज़रे कत्ल के मामले आप पर बने। प्रयिजनों और करीबियों और दोस्तों यहां तक कि बच्चों की मौत के नज़ारे देखे लेकिन आप के पास रहने वालों ने कभी आप के चेहरे और आंखों पर आप की हार्दिक भावनाओं को व्यक्त होते नहीं देखा लेकिन इस मौके पर जहां इश्क रसूल की अभिव्यक्ति का अवसर आया तो आपकी आँखें बाढ़ की तरह बह निकलें।

(उद्धरित सीरत तय्यब: लेखक हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब पृष्ठ 28-30)

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इश्क-मोहब्बत के नज़ारे आप के लेखन और माल्फूज़ात में भी असंख्य मिलते हैं। एक जगह इस्लाम विरोधियों के आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हस्ती पर हंसी ठट्ठा करने की बातें सुनकर अपनी की हार्दिक स्थिति व्यक्त करते हुए आपने फरमाया कि "मेरे दिल को किसी चीज़ से कभी इतना दु:ख नहीं पहुंचाया जितना कि उन हंसी ठट्ठा ने पहुंचाया है जो वह हमारे रसूल पाक सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शान में करते रहते हैं। उनके दिल को छेदने वाले ताने तथा आरोप जो वह हज़रत ख़ैरे बशर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की विशेषताओं वाली हस्ती के ख़िलाफ करते हैं मेरे दिल को सख्त घायल कर रखा है। ख़ुदा की क़सम ! अगर मेरी सारी संतान और नस्ल की नस्ल और मेरे सारे दोस्त और मेरे सारे सहायक और मददगार मेरी आँखों के सामने कत्ल कर दिए जाएं और स्वयं मेरे अपने हाथ पांव काट दिए जाएँ और मेरी आंख की पुतली निकाल फैंकी जाए और मैं अपनी सभी मुरादों से वंचित कर दिया जाऊं और अपने सभी सुख और सभी सुविधाओं को खो बैठूँ तो इन सारी बातों की तुलना में मेरे लिए यह सदमा भारी है कि रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ऐसे नापाक हमले किए जाएं। अत: हे मेरे आसमानी आक़ा! तू हम पर अपनी दया और सहायता की नज़र फरमा और हमें इस महान परीक्षा से मुक्ति प्रदान कर।"

(आइना कमालाते इस्लाम, रूहानी ख़ज़ायन भाग 5 पृष्ठ 15)(उद्धरित सीरत तय्यब: लेखक हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब पृष्ठ 43-44)

क्या कोई है जो इस तरह की भावनाओं को व्यक्त कर सके। इश्क और प्यार का दावा करने वाले तो बहुत हैं नामूसे रिसालत और ख़त्मे नबुव्वत के नाम पर फित्ना फसाद और कत्ल करने वाले तो बहुत लोग हैं लेकिन उन्होंने क्या कोशिशें की हैं आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के स्थान को दुनिया से मनवाने के और इस्लाम और कुरआन को दुनिया में फैलाने के लिए। आप के शब्द केवल मुंह का दावा नहीं हैं बल्कि आप के साथ संबंध रखने वाले भी और ग़ैर भी इस बात की गवाही देते हैं कि आपका आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इश्क और प्यार का इज़हार आप के दिल की आवाज़ और आप के हर कर्म से साबित होता है। अत: यह व्यक्त करते हुए अमृतसर के एक अख़बार जिसका नाम " वकील" था जो ग़ैर अहमदियों का अख़बार था उस ने आपकी वफात पर लिखा कि

"मिर्ज़ा साहब की वफात ने उनकी कुछ आस्थाओं से गंभीर मतभेद के बावजूद हमेशा की जुदाई पर मुसलमानों को हां खुले विचारों वाले मुसलमानों को महसूस करा दिया है कि उनका एक बड़ा व्यक्ति उन से जुदा हो गया है और इसके साथ ही इस्लाम के विरोधियों के मुकाबले पर इस्लाम की इस शानदार प्रतिरक्षा का भी जो उसकी हस्ती से संबद्ध थी, समाप्त हो गया है।" फिर कहता है कि "मिर्ज़ा साहिब के लिट्रेचर की कद्र और महानता आज जबकि वह अपना काम पूरा कर चुका है हमें दिल से स्वीकार करनी पड़ती है।" लिखता है कि "भविष्य में हमारी प्रतिरक्षा का सिलसिला चाहे किसी स्थिति तक विस्तृत हो असम्भव है कि मिर्ज़ा साहिब की लेखनी की अनदेखी की जा सके।"

(उद्धरित सीरत तय्यब: लेखक हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब पृष्ठ 45-46)

इन लेखों के बिना इस्लाम की रक्षा संभव ही नहीं।

अत: यह सब कुछ जो आपने किया तो इस्लाम को अल्लाह तआला का अंतिम धर्म और पूर्ण और सम्पूर्ण धर्म साबित करने के लिए और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्यार की वजह से आपके स्थान का लोहा मनवाने के लिए किया। दुनिया को बताने के लिए किया कि आप का ही मूल स्थान है। सारी दुनिया को और दुनिया के धर्मों पर यह स्पष्ट किया कि मुहम्मद के धर्म जैसा कोई धर्म नहीं है।

आपत्ति करने वाले आपके आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इश्क और मुहब्बत की अभिव्यक्ति को तो पढ़ें, इस पर विचार करें वरना केवल आपत्ति के लिए आपत्ति तो अज्ञानता की निशानी है। आप एक आज्ञाकारी छात्र और एक उपकृत सेवक की तरह हमेशा फरमाते थे कि यह सब कुछ मुझे मेरे आका हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के माध्यम और आप का पालन करने से ही मिला है। अत: यह व्यक्त करते हुए आप एक जगह फरमाते हैं कि

"मैं उसी ख़ुदा की कसम खाकर कहता हूँ जैसा कि उसने इब्राहीम से संवाद किया और कलाम किया और फिर इसहाक और इस्माइल और याकूब और यूसुफ और मूसा और यीशु मरियम और आख़िर हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से ऐसा बोला कि आप पर सबसे अधिक प्रकाशित और पवित्र वह्यी अवतरित की ऐसा ही उसने मुझे भी अपने संवाद और कलाम का सौभाग्य प्रदान किया। लेकिन यह सौभाग्य मुझे मात्र आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अनुकरण से प्राप्त हुआ। अगर मैं आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उम्मत न होता और आप का पालन नहीं करता तो अगर दुनिया के सभी पहाड़ों के बराबर मेरे कर्म होते तो भी फिर भी मैं यह संवाद और कलाम का सौभाग्य कभी न पाता।

(तजल्लयिाते इलाहिया रूहानी ख़ज़ायन भाग 20 पृष्ठ 411-412)

ये बातें सुनकर जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर आपत्ति करता है वह ज़ालिम और जाहिल और कुत्सित है इसके अलावा कुछ नहीं कहा जा सकता। यह जो बड़े विद्वान बने फिरते हैं उनका मामला अब ख़ुदा तआला पर है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बेअसत का उद्देश्य जहां तौहीद की स्थापना और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के स्थान और सम्मान को स्पष्ट कर के दुनिया को आप के झंडे तले लाना था वहाँ बन्दों के अधिकार अदा करना और अल्लाह तआला की सृष्टि पर करूणा की पहचान कराना और उस पर अमुकरण करवाना भी था। इसलिए आप ने बैअत की शर्तों में भी यह शर्त रखी बल्कि दो शर्तों का सीधा संबंध हैं।

शर्त नंबर 4 में आपने फरमाया कि "आमतौर पर अल्लाह तआला की सृष्टि को सामान्य और मुसलमानों को केवल अपने स्वाभाविक जोशों से किसी प्रकार का अवैध कष्ट नहीं देगा।" (यह बैअत करने वाला वादा करे।) "न ज़बान से, न हाथ से न किसी और तरह से।

फिर नौवीं शर्त है कि "अल्लाह की सृष्टि की सहानुभूति में अल्लाह तआला के लिए संलग्न रहेगा और जहां तक बस चल सकता है अपनी ख़ुदा तआला द्वारा दी गई प्रतिभा शक्तियों और नेअमतों से मानव जाति को लाभ पहुंचाऐगा।"

(इज़ाला औहाम रूहानी ख़ज़ायन भाग 3 पृष्ठ 564)

अत: तदनुसार इस्लामी शिक्षा का उल्लेख करते हुए आप फरमाते हैं कि

"धर्म के दो ही हिस्से हैं। एक ख़ुदा तआला से प्यार करना और एक मानव जाति से इतना प्यार करना कि उनकी परेशानी को अपनी परेशानी समझ लेना और उनके लिए दुआ करना।"

(नसीमे दावत रूहानी ख़ज़ायन भाग 19 पृष्ठ 464)

फिर आप फरमाते हैं "इस्लामी शिक्षा की दृष्टि से धर्म और इस्लाम के हिस्से सिर्फ दो हैं या यूं कह सकते हैं कि यह शिक्षा दो बड़े लक्ष्यों पर आधारित है।" आप फरमाते हैं कि "अव्वल (यह कि) एक ईश्वर को जानना जैसा कि वह वास्तव में मौजूद है और उस से प्यार करना और उसकी सच्ची आज्ञाकारिता में अपने अस्तित्व को लगाना जैसा कि इताअत व प्यार की शर्त है।" फिर फरमाया कि "दूसरा उद्देश्य है कि उसके बन्दों की सेवा और करुणा में अपने सभी शक्तियां खर्च करना" (सारी शक्तियां और ताकतें और क्षमताओं को खर्च करना) "और बादशाह से लेकर कम से इंसान तक जो दया करने वाला हो धन्यवाद और दयालुता के साथ बदला अदा करना।"

(तौहफा कैसरिया रूहानी ख़ज़ायन भाग 12 पृष्ठ 281)

अत: यह है वह शिक्षा जो ख़ुदा तआला के प्यार के बाद सृष्टि से मामला करने की है या यूं कह सकते हैं कि ख़ुदा तआला के प्रेम के कारण उनकी सृष्टि की तरफ ध्यान दिलाता है।

इस बारे में आप की अपनी ख़ुद की स्थिति और कर्म क्या है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपनी स्थिति इस बारे में क्या थी? आप किस तरह अनुकरण फरमाते थे। इसकी व्याख्या करते हुए एक जगह आप फरमाते हैं।

"मैं सभी मुसलमानों और ईसाइयों और हिंदुओं और आर्यों पर यह बात प्रकट

करता हूं कि दुनिया में कोई मेरा दुश्मन नहीं है।" (अर्थात मैं किसी को भी, यह विरोध करने वालों को भी दुश्मन नहीं समझता।) फरमाया " मैं मानव जाति से ऐसा प्रेम करता हूँ कि जैसे दयालु मां अपने बच्चों से बल्कि इससे बढ़कर।" फरमाया कि "मैं केवल उन झूठी मान्यताओं का दुश्मन हूं जिनसे सच्चाई का खून होता है। मानव सहानुभूति मेरा कर्तव्य है और झूठ और शिर्क और ज़ुल्म और प्रत्येक कदाचार और अन्याय और अनैतिकता से घृणा मेरा सिद्धांत।"

(अर्बईन रूहानी ख़ज़ायन भाग 17 पृष्ठ 344)

फिर आप एक जगह अधिक व्याख्या करते हुए फरमाते हैं कि "स्पष्ट है कि हर एक चीज़ अपने जाति से प्यार करती है।" (जो उस की किस्म हो, उसी से प्यार करती है।" (यहां तक कि चीनटियाँ भी (चींटियों से) अगर कोई स्वार्थ आड़े न हो। इसलिए जो ख़ुदा तआला की तरफ बुलाता है (आप ख़ुदा तआला द्वारा बुला रहे हैं) उसका कर्तव्य है कि "सबसे अधिक प्यार करे। अत: मैं मानव जाति में सबसे अधिक प्यार करता हूँ। हां उनके बुरे कर्मों और प्रत्येक प्रकार के अत्याचार और फिस्क़ और विद्रोह का दुश्मन हूं। किसी की हस्ती का दुश्मन नहीं। इसलिए वह ख़ज़ाना जो मुझे मिला है जो जन्नत के सभी खज़ाने और ख़ुशी की कुंजी है वह मुहब्बत के जोश से मानव जाति के सामने पेश करता हूँ और यह बात कि वह माल जो मुझे मिला है वह वास्तव में हीरा और सोना और चांदी जैसा है कोई खोटी चीज़ नहीं हैं बड़ी आसानी से तलाश हो सकती है और वह ये कि इन सभी दिरहम और दीनार और जवाहरात पर सुल्तानी सिक्के का निशान है।" (अर्थात सुल्तानी बादशाह के सिक्के का निशान है कौन सा बादशाह।?) " अर्थात वह आसमानी गवाहियाँ मेरे पास हैं, जो किसी दूसरे के पास नहीं।" (अल्लाह तआला मेरा समर्थन करता है मेरी गवाही देता है।) फरमाया कि "मुझे बतलाया गया है कि सभी धर्मों में इस्लाम धर्म ही सच्चा है मुझे समझाया गया है कि सभी हिदायतों में से केवल कुरआन की हिदायत ही विश्वसनीयता के पुर्ण स्तर और इंसानी मिलावटों से मुक्त है। मुझे समझाया गया है कि सभी रसूलों में से पूर्ण शिक्षा देने वाला और उन्नत शुद्ध और हिकमत वाली शिक्षा देने वाला और मानवीय कमालों का अपने जीवन के माध्यम से उच्च नमूना दिखलाने वाला केवल हज़रत सय्यदना व मौलाना मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं और मुझे ख़ुदा की पवित्र और उज्जवल वह्यी से सूचना दी गई है मैं उसके द्वारा मसीह मौऊद और महदी मौऊद और आंतरिक और बाहरी मतभेदों का हकम (फैसला करने वाला) हूँ। यह जो मेरा नाम मसीह और महदी रखा गया इन दोनों नामों से रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे सम्मानित किया और फिर ख़ुदा ने अपने अप्रत्यक्ष कलाम से यही मेरा नाम रखा और फिर समय की वर्तमान स्थिति ने मांग की कि यही मेरा नाम हो।

ये बातें केवल आप ने लिखने के लिए नहीं लिख दीं या केवल दावा नहीं किया कि आप को मानव जाति से प्यार है और सबसे अधिक प्यार है। इसकी व्यावहारिक अभिव्यक्ति भी आप के जीवन में हमें दिखाई देती है। एक तरफ आप मसीह और महदी होने का दावा है और इस दावे की पुष्टि के लिए अल्लाह तआला जब लोगों के लिए कुछ निशान प्रकट करता है ऐसे निशान जो आपदाओं के रंग में हैं लोगों के लिए तो बेचैन हो जाते हैं। अत: मौलवी अब्दुल करीम साहिब जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मकान के एक हिस्से में रहते थे बताते हैं कि प्लेग की महामारी फैलने के दिनों में जब एक दिन में कई लोग इसका शिकार हो रहे थे और मौत के मुंह में जा रहे थे तो मौलवी अब्दुल करीम साहिब कहते हैं कि मैंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को दुआ करते हुए सुना जिसे सुनकर मैं हैरान रह गया। हज़रत मौलवी साहिब कहते हैं कि "इस दुआ में आप की आवाज़ (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की आवाज़) में इतना दर्द और वेदना थी कि सुनने वालों का पित्ता पानी होता था (और सुन कर भी अजीब भावनात्मक स्थिति छा जाती थी।) "और आप इस तरह से ख़ुदा तआला के अस्ताना पर रोया करते थे (इस तरह रो रहे थे और ऐसे संकट से आप की आवाज़ निकल रही थी) जैसे कोई स्त्री प्रसव से व्याकुल हो।" (मौलवी साहिब कहते हैं कि) मैंने ध्यान से सुना तो आप मानव जाति के लिए प्लेग के प्रकोप से मुक्ति के लिए दुआ करते थे कि इलाही अगर ये लोग प्लेग के अज़ाब से मारे जाएंगे तो तेरी इबादत कौन करेगा।"

(उद्धरित सीरत तय्यब: हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब पृष्ठ 54)

अत: विचार करें कि एक भविष्यवाणी के अनुसार विरोधियों पर यह अज़ाब आ रहा है, लेकिन आप इसे दूर होने की दुआ मांग रहे हैं और इस अज़ाब के टलने की वजह से हो सकता है, बल्कि विरोधियों ने शोर भी मचाना था आप की भविष्य वाणी संदिग्ध हो सकती थी लेकिन मानव जाति की सहानुभूति में इसकी परवाह नहीं की और दुआ यह है कि उन्हें अज़ाब से बचा ले और ईमान की सुरक्षा के लिए कोई दूसरा रास्ता दिखा दे। अपने विरोद्धी भी कभी यह नहीं कह सकते कि आप ने सहानुभूति के अवसर पर उनसे सहानुभूति नहीं की। इसकी बेशुमार घटनाएं आप के जीवन में मिलती हैं। एक घटना बताता हूँ।

जब मिनारतुल मसीह का निर्माण शुरू होने लगी तो हिंदुओं ने शोर मचाया कि इससे हमारे घरों में बे परदगी होगी। इस पर सरकार की ओर से एक मजिस्ट्रेट अनुसंधान के लिए आया। उसे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने सभी विवरण बताया कि यह तो एक चिह्न के रूप में इस पर रौशनी लगाई जाएगी। इस से क्षेत्र रोशन होगा। बे परदगी बिल्कुल नहीं होगी और अगर उनकी बे परदगी है तो हमारे घरों की भी होगी। तो यह बिल्कुल ग़लत धारणा है कि बे परदगी होगी। यह सब व्यर्थ बहाने हैं। मजिस्ट्रेट के साथ वहां के एक हिंदू लाला बुड्ढा मल भी थे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि यहाँ रहते हैं। कादियान में हमारे पड़ोसी हैं। इस शहर के रहने वाले हैं। इन्हें पता है मैंने हमेशा पड़ोसियों का और सृष्टि का ध्यान रखा है। यह लाला बुड्ढा मल आप के साथ हैं। इन से पूछें कि कभी कोई एक ऐसा मौका भी आया जब उन्हें मेरी मदद की ज़रूरत हुई और मैंने इसमें कोई कमी की हो या किसी भी प्रकार का लाभ उन्हें पहुंचाने में कभी मेरे द्वारा रोक हुई हो और फिर उनसे यह भी पूछ लें कि क्या कभी ऐसा हुआ है कि क्या कभी ऐसा हुआ कि उन्हें(लाला साहिब को)मुझे नुकसान पहुंचाने का कोई मौका हो और यह नुकसान से रुके हैं। उन्होंने हमेशा मुझे नुकसान पहुंचाया और मैंने हमेशा उन्हें लाभ पहुंचाया। तब लाला जी वहाँ मजिस्ट्रेट के साथ थे उन्हें हिम्मत नहीं हुई कि इस बात से इनकार करते बल्कि शर्म और लज्जा व्यक्त की।

(उद्धरित सीरत तय्यव: हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब पृष्ठ 61-63)

तो यह थे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के नमूने कि नुकसान पहुंचाने वालों को भी मानव सहानुभूति के अधीन लाभ पहुंचाया। मौलवी मोहम्मद हुसैन बटालवी साहिब जिन्होंने विरोध की सीमा करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर कुफ्र का फतवा लगाया और दज्जाल और ज़ाल बताया, नऊज़ो बिल्लाह। सारे देश में आप के ख़िलाफ नफरत और दुश्मनी की आग भड़काई लेकिन एक मुकदमा में जब आप के वकील ने मौलवी मोहम्मद हुसैन के परिवार के बारे में कुछ आपत्ति जनक अपमानजनक सवाल करने चाहे तो आप अलैहिस्सलाम ने सख्ती से रोक दिया। वकील मौलवी फज़लदीन साहिब ग़ैर अहमदी थे। वह कहा करते थे कि मिर्ज़ा साहिब अजीब इंसान हैं अजीब आचरण के मालिक हैं कि एक व्यक्ति उनकी इज्ज़त बल्कि जान पर हमला करता है और जब इसके जवाब में उसकी गवाही को कमज़ोर करने के लिए कुछ सवाल किए जाते हैं तो आप तुरंत रोक देते हैं कि मैं ऐसे प्रश्नों की अनुमति नहीं है। इन्हीं मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब के बारे में अपने एक अरबी शेर में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह भी फ़रमाया कि

قَطَعْتَ وِدَادًا قَدْ غَرَسْنَاهُ فِي الصِّبَا
وَلَيْسَ فُؤَادِيْ فِي الْوَدَادِ يُقَصِّرُ

यानी तूने उस प्यार के पेड़ को अपने हाथ से काट दिया जो हम ने जवानी के दिनों में अपने दिल में स्थापित किया था मगर मेरा दिल किसी मामले में मुहब्बत के मामले में कमी और कोताही करने वाला नहीं।

(उद्धरित सीरत तय्यब: हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब पृष्ठ 57-59)

बहरहाल यह तो एक उदाहरण है कि आप के मिशन को ख़त्म करने के लिए बहुत सारे मुसलमान उलेमा ने कोशिशें कीं। असंख्य तथाकथित उलमा ने आप का विरोध किया। आप पर कुफ्र के फतवे लगाए और अब तक लगाते चले आ रहे हैं। इसी का नतीजा है कि दुनिया के विभिन्न देशों में मुस्लिम देशों में विरोध होता है। यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की शिक्षा का हम पर प्रभाव है कि आज भी हम उन विरोधियों के जवाब में उनके ख़िलाफ नैतिक मानकों को नहीं छोड़ते और कानून को भी अपने हाथ में नहीं लेते। काश उन को समझ आ जाए कि इस ज़माने के हकम और अदल और मसीह और महदी हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद कादियानी अलैहिस्सलाम ही हैं और इस्लाम के प्रकाशन और तौहीद की स्थापना और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वास्तविक हुकूमत जो दिलों में स्थापित होनी है धरती पर नहीं, दिलों पर स्थापित होनी है वह मसीह मौऊद के माध्यम से ही स्थापित होनी है और आप की जमाअत के माध्यम से ही स्थापित होनी है न कि किसी तलवार या बंदूक या शक्ति से या आतंकवाद फैलाने और इस्लाम के नाम पर मज़लूमों की हत्या करने से। यह यूरोप में जो घटनाएँ इस्लाम के नाम पर लोगों हो रही हैं या यूरोप में जो घटनाएं हो रही हैं ये इस्लाम के नाम पर व्यक्ति या संगठन कर रहे हैं या यहाँ लंदन में दो दिन पहले क्रूर रूप में मासूमों की हत्या की गई है। राह

चलने वालों पर कार चढ़ा दी। एक पुलिस वाले को मार डाला। तो यह इसलिए है कि इन तथाकथित उलमा ने लोगों का ग़लत मार्गदर्शन करके उनके दिल में बजाय इस्लाम की सुंदर शिक्षा डालने के अत्याचार और बर्बरता के विचार पैदा कर दिए हैं।

अत: ऐसे में हम अहमदियों का काम है जैसा कि मैं पहले भी अक्सर कहता रहा हूं कि इस्लाम के हुसन को दुनिया के सामने पेश करें। जहां तक अहमदियत के विरोध का संबंध है यह अहमदियत का कुछ नहीं बिगाड़ सकते। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने भेजा है इसलिए ही भेजा है कि आप को सफल करना है और इस्लाम अब आप के द्वारा ही फैलना है। इसलिए हम ने इस इस्लाम को फैलाना है। हत्याओं की, मासूमों को मारने की जो ये हरकतें हो रही हैं इन हरकतों को हम ने दृढ़ता से हर जगह रद्द करना है इसके ख़िलाफ आवाज़ उठानी चाहिए और पीड़ितों से सहानुभूति करना भी हमारा काम है।

हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि

"हे सभी लोगो सुन रखो कि यह उस की भविष्यवाणी है जिस ने पृथ्वी और आकाश बनाया। वह अपनी इस जमाअत को सभी देशों में फैलाएगा और दलीलों और तर्कों की दृष्टि से सभी पर उन्हें विजय प्रदान करेगा। वे दिन आते हैं बल्कि करीब हैं कि दुनिया में केवल यही एक धर्म होगा जो सम्मान के साथ याद किया जाएगा। ख़ुदा इस धर्म और सिलिसला में बहुत अधिक आदत से हट कर बरकत डालेगा और प्रत्येक जो इसके विलुप्त करने की चिंता रखता है नामुराद रखेगा और यह प्रभुत्व हमेशा रहेगा यहाँ तक कि क़यामत आ जाएगी। अगर अब मुझे ठठ्ठा करते हैं तो ठठ्ठा से क्या नुकसान क्योंकि कोई नबी नहीं जिससे ठठ्ठा नहीं किया गया। तो जरूर था कि मसीह मौऊद से भी ठठ्ठा किया जाता जैसा कि अल्लाह तआला फरमाता है कि يٰحَسۡرَةً عَلَى الۡعِبَادِ مَا يَأۡتِيۡهِمۡ مِّنۡ رَّسُوۡلٍ اِلَّا كَانُوۡا بِهٖ يَسۡتَهۡزِءُوۡنَ (सूरह यासीन 31) इसलिए ख़ुदा की तरफ से यह निशानी है कि प्रत्येक नबी से ठठ्ठा किया जाता है। मगर ऐसा आदमी जो सभी लोगों के सम्मुख आसमान से उतरे और फरिशते भी उसके साथ हों उस से कौन ठठ्ठा करेगा। इसलिए इस दलील से भी बुद्धिमान समझ सकता है कि मसीह मौऊद का आसमान से उतरना केवल झूठा विचार है। याद रखें कि कोई आसमान से नहीं उतरेगा। हमारे सब विरोधी जो अब जीवित हैं वे सभी मरेंगे और कोई उनमें से ईसा पुत्र मरियम को आसमान से उतरते नहीं देखेगा और फिर उनके नस्ल जो बाकी रहेगी वह भी मर जाएगा और उनमें से भी कोई आदमी ईसा पुत्र मरियम को आकाश से उतरते नहीं देखेगा और फिर बच्चों की संतान मर जाएगी और वह भी मरियम के बेटे को आसमान से उतरते नहीं देखेंगे तब उनके दिलों में घबराहट होगी कि ज़माना सलीब के विजय का भी बीत गया और दुनिया दूसरे रंग में आ गई मगर मरियम का बेटा ईसा अब तक आसमान से न उतरा तब बुद्धिमान अचानक इस विश्वास से निराश हो जाएंगे और अभी तीसरी सदी आज के दिन से पूरी नहीं होगी कि ईसा की प्रतीक्षा करने वाले क्या मुसलमान और क्या ईसाई सख्त निराश और शंकित होकर इस झूठे विश्वास को छोड़ देंगे और दुनिया में एक ही धर्म होगा और एक ही मार्ग दर्शक। मैं तो एक बीज रोपण करने आया हूं अत: मेरे हाथ से वह बाज बोया गया और अब वह बढ़ेगा और फूलेगा और कोई नहीं जो उसे रोक सके।

(तज़करतुश्शहादतैन ख़ज़ायन भाग 17 पृष्ठ 344)

अल्लाह तआला के मसीह का लगाया हुआ यह बीज अल्लाह तआला की कृपा से फल फूल और बढ़ रहा है। हम ने अगर उसकी हरी शाखाएं बनना है तो हमारा काम है कि जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के लेखनों और कर्म से प्रमाणित है, हम अल्लाह तआला से मुहब्बत आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से प्रेम और अपने कर्मों और मानव जाति से सहानुभूति और प्यार को इस तरह बनाएं कि हमारे हर कर्म से यह दिखे। अल्लाह तआला हमें इसकी तौफीक प्रदान करे।

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

हैं जो बहिश्ती (स्वर्गीय) हैं। अत: हुज़ूर ने अपनी एक भूमि क़ब्रिस्तान के लिए भेंट की। तथा इसका नाम बहिश्ती मक़बरा रखा। इसमें दफ़न होने के लिए हुज़ूर ने यह शर्तें रखीं कि :-

''वही व्यक्ति इसमें दफ़न होगा जो सच्चा तथा साफ़ मुसलमान हो। संयमी हो प्रत्येक प्रकार के शिर्क (अनेकेश्वरवाद) तथा अन्य कामों से बचता हो।" इसके अतिरिक्त यह शर्त भी रखी कि यह दसवाँ भाग अपनी जायदाद तथा आय का इस्लाम के प्रचार के लिए चन्दे के तौर पर देता रहेगा। परन्तु हुज़ूर ने यह लिखा कि यदि कोई व्यक्ति चन्दा देने का बिल्कुल सामर्थय न रखता हो पर बहुत नेक तथा श्रद्धालु हो तो उसे भी इसमें दफ़न करने की आज्ञा दी जा सकती है।

इसी प्रबन्ध के अनुसार क़ादियान तथा रब्वा में बहिश्ती मक़बरा बना हुआ है। जिसमें उपरोक्त शर्तों को पूरा करने वाले अहमदियों को मृत्यु के बाद दफ़न किया जाता है। तथा प्रत्येक अहमदी का यह ईमान है कि इसमें यही अहमदी दफ़न हो सकता है जो अल्लाह तआला के सम्मुख बहिश्ती हो।

पत्रिका तशहीज़ुल अज़हान

1 मार्च 1906 को हुज़ूर की आज्ञा से हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब (ख़लीफ़तुल मसीहिस्सानी रज़िल्लाहो अन्हो) ने एक उर्दू पत्रिका तशहीज़ुल अज़हान के नाम से अहमदी नौजवानों की तरबिय्यत के लिए जारी की ।

डाक्टर डोई की हलाकत

अमरीका में एक व्यक्ति डाक्टर जांन अलैगज़ैन्डर डोई के नाम से प्रसिद्ध था। उसने नबी होने तथा ईसाइय्यत को फैलाने का दावा किया। तथा साथ ही यह भी कहना आरम्भ कर दिया कि मैं इस्लाम को तबाह व बर्बाद कर दूँगा । हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का भी उसने बहुत अपमान किया तथा हुज़ूर की शान में बड़ी गन्दी बातें कहीं। जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को यह पता लगा तो हुज़ूर ने उसे ललकारा तथा लिखा कि :-

''एक आसान उपाय है जिससे इस बात का निर्णय हो जाएगा कि डोई का ख़ुदा सच्चा ख़ुदा है या हमारा ख़ुदा। वह बात यह है कि डोई साहिब सारे मुसलमानों को बार-बार मौत की भविष्यवाणी न सुनाएँ अपितु उनमें से केवल मुझे अपने ध्यान में रख कर यह दुआ करें कि जो हम में से झूठा है वह पहले मर जाए।"

(रेवेवियू ऑफ़ रिलिज़न सितम्बर 1902 ई.)

साथ ही हुज़ूर ने यह भी लिखा कि :-

''यदि डोई मुक़ाबले से भाग गया तब भी विश्वास रखो कि उसके सैहून (डोई का बसाया हुआ नगर - अनुलेखक) पर शीघ्र ही एक आफ़त (मुसीबत) आने वाली है।"

(हक़ीक़तुल वही पृष्ठ : 71)

जब लोगों ने डोई से कहा कि इसका उत्तर दो तो उस ने बड़े घमण्ड के साथ यह कहा कि :-

''क्या तुम समझते हो कि मैं इन मच्छरों तथा मक्खियों को उत्तर दूँगा ? यदि मैं इन पर अपना पाँव रखूँ तो मैं इनको कुचल कर मार डालूँगा।"

(हक़ीक़तुल वही पृष्ठ : 73)

आख़िर उसे इस शैतानी की सज़ा मिल गई तथा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की भविष्यवाणी पूरी हो गई। उस पर पक्षघात (फ़ालिज) का हमला हुआ। जबान बन्द हो गई। उसके चेलों ने उसे शराबी तथा विश्वासघात देख कर उसका साथ छोड़ दिया। उस की बस्ती नष्ट हो गई। अन्तत: मार्च 1907 ई. में वह अत्यन्त दु:ख तथा पीड़ा के साथ अकेला होने की हालत में मर गया। (शेष.....)

(शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP -45/2017-2019 Vol. 2 Thursday 27 April 2017 Issue No. 17

MANAGER : NAWAB AHMAD
Tel. : 91- 1872-224757
Mobile : 91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 300/-

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत की बरकतें

हज़रत मौलवी ग़ुलाम रसूल साहिब राजेकी का वर्णन है कि :-

''जब हज़रत मौलाना हसन अली साहिब भागलपुरी (र) क़ादियान आये तो उन्होंने हज़रत मौलाना हकीम नूरुद्दीन साहिब से पूछा कि आंजनाब को हज़रत मिर्ज़ा साहिब से हुस्ने इरादत का सौभाग्य कैसे प्राप्त हुआ। आपने फ़र्माया मैं इस चौदहवीं सदी के बारे में मुजद्दिदों (सुधारकों) के ज़हूर वाली हदीस के अनुसार किसी मुजद्दिद के पैदा होने का बड़े शौक़ के साथ मुन्तज़िर था। कहीं से किसी की आवाज़ सुनाई दे।उसी दौरान बराहीन-ए-अहमदिया का इश्तिहार निकला और मेरे पास भी पहुँचा। इश्तिहार पढ़ते ही मैं बहुत ख़ुश हुआ कि वादा-ए-तज्दीद के ज़हूर (अर्थात मुजद्दिद के प्रकट) होने की खुशख़बरी पाने का मौक़ा मिला। जब मैं क़ादियान गया तो सुन्नते नबवी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अनुसार दुआ पढ़ी। जब आप पर नज़र पड़ी तो आपकी सच्चाई वाली सूरत देखकर पहचान गया कि ऐसा मुँह सच्चों के बग़ैर नहीं हो सकता। आपको देखने से और आपके सद्व्यवहार से मेरा दिल इतना प्रभावित हुआ कि मुहब्बत से मैं आपका प्रेमी हो गया। फिर एक गुनाह मुझे महसूस हुआ करता था। उसके दूर करने के लिए मैंने हर संभव कोशिश की लेकिन वह दूर न हुआ था। अन्त में हज़रत अक़दस की तवज्जुह और बरकत से स्वयं दूर हो गया हालाँकि मैंने आप से इस गुनाह का वर्णन भी नहीं किया था। आपने चर्चा के तौर पर मौलवी हसन अली साहिब से यह भी फ़र्माया कि मेरे नज़दीक व युज़क्कीहिम् की विशेषता ख़ुदा तआला के नबियों के लिए निशान के तौर पर पाई जाती है। अर्थात यह कि अल्लाह की ओर से आए हुए सुधारकों की संगति से लोगों को पवित्र होने का फ़ायदा प्राप्त होता है और अन्तरात्मा गुनाहों से नफ़रत करने लगती है और यह बात हज़रत अक़दस मिर्ज़ा साहिब की संगति से मुझे तो इस समय मिल रही है और बारीक से बारीक त़क्वा की राहें खुलती जा रही हैं ।"

आफ़ फ़रमाते हैं कि :-

''एक दिन ऐसा संयोग हुआ कि क़ादियान के एक अहमदी दोस्त ने बहुत से अहमदी दोस्तों को निमन्त्रण दिया जिनमें हज़रत मौलाना नूरुद्दीन साहिब और मौलवी हसन अली साहिब भी थे। जब खाने से फ़ुर्सत होकर निवास स्थान की ओर वापिस आ रहे थे तो रास्ते में एक मकान था। उस पर सरकण्डों का छप्पर था। उस छप्पर से कुछ सरकण्डे जो काफी नीचे की ओर झुके हुए थे। उनमें से एक सरकण्डे से मौलवी हसन अली साहिब ने दाँतों को कुरेदने के लिए एक तिनका तोड़ लिया।जब हज़रत मौलाना नूरुद्दीन साहिब रज़ियल्लाहो अन्हो ने मौलवी हसन अली साहिब को देखा कि आपने दाँत कुरेदने के लिए तिनका तोड़ा है तो आप खड़े हो गये और मौलवी साहिब महोदय को संबोधित करते हुए फ़र्माया। मौलवी साहिब ! हज़रत मिर्ज़ा साहिब की संगति का असर मेरे दिल पर त़क्वा के लिहाज़ से इतना ज्यादा पड़ा है कि जिस तिनके को आपने तोड़ा है। मेरा दिल उसके लिए कदापि हिम्मत नहीं कर सकता बल्कि ऐसे काम को त़क्वा के ख़िलाफ़ और गुनाह महसूस करता है। इस पर मौलवी हसन अली साहिब अत्यन्त अचंभित होकर कहने लगे कि क्या यह काम भी गुनाह भी गिना जाता है। मैं तो इस को गुनाह नहीं समझता। हज़रत मौलाना ने फ़र्माया, जब यह सरकण्डा दूसरे के मकान की चीज़ है तो उससे मकान मालिक की इजाज़त के बग़ैर तिनका तोड़ना मेरे नज़दीक गुनाह में शामिल है। मौलवी हसन अली साहिब के दिल पर तक्वा के इस बारीक व्यावहारिक नमूने का बहुत बड़ा असर हुआ ।"

हज़रत मौलाना राजेकी साहिब ही का वर्णन है कि :-

''नवाब खान साहिब तहसीलदार जो सच्चे और निश्छल अहमदी थे।जब गुजरात में स्थानान्तरित होकर आये, तो जब दौरे में राजेकी में आते तो मेरे पास कुछ देर अवश्य ठहरते और मुझसे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम की सच्चाई और महानता के बारे में अक्सर बातचीत होती रहती थी।एक दिन इसी तरह की बातचीत का सिलसिला जारी था कि नवाब खाँ साहिब तहसीलदार मरहूम ने मुझसे चर्चा की कि मैंने हज़रत मौलाना हकीम नूरुद्दीन साहिब से एक बार कहा कि मौलाना ! आप को पहले ही बहुत बड़े बुज़ुर्ग थे।आपको हज़रत मिर्ज़ा साहिब की बैअत से ज़्यादा क्या फ़ायदा मिला ? इस पर हज़रत मौलाना साहिब(र) ने फ़र्माया, नवाब खाँ ! मुझे हज़रत मिर्ज़ा साहिब की बैअत से फ़ायदे तो बहुत से मिले हैं लेकिन एक फ़ायदा उनमें से यह हुआ है कि पहले मुझे हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़ियारत ख़्वाब के द्वारा हुआ करती थी अब चेतना में भी होती है ।"

हज़रत मौलाना राजेकी साहिब की यह भी रिवायत है कि :-

''एक बार हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ज़िन्दगी में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल(र) अपने दवाख़ाना में थे। ख़ाकसार भी वहाँ ही मौजूद था।इतने में संयोग से नाना जान अर्थात हज़रत मीर नासिर नवाब(र) जो हज़रत उम्मुल मोमिनीन रज़ियल्लाहो अन्हा के पिता थे, आ गये। दोनों पवित्रात्माओं के मध्य बातचीत शुरू हुई। बातों बातों में हज़रत मौलवी साहिब(र) ने हज़रत मीर साहिब(र) से फ़र्माया, मीर साहिब ! एक बात आपसे पूछना चाहता हूँ। हज़रत मीर साहिब ने कहा, कहिए। आपने फरमाया मीर साहिब ! आपको तो हम जानते ही हैं कि आप भी अहमदियत से पहले अहले हदीस थे और हम भी। लेकिन यह क्या बात हुई कि आपकी लड़की को हज़रत मसीह मौऊद जैसा पति मिल गया। उसके जवाब में हज़रत मीर साहिब ने फरमाया असल बात तो अल्लाह तआला के फ़ज़्ल ही की है।लेकिन जब से मेरी यह लड़की पैदा हुई है। मैंने कोई नमाज़ ऐसी नहीं पढ़ी जिसमें इसके लिए यह दुआ न की हो कि हे अल्लाह ! तेरे निकट जो व्यक्ति सबसे अधिक योग्य और उचित हो उसके साथ उसका विवाह हो जाये। हज़रत मौलवी साहिब ने यह जवाब सुनकर फ़र्माया।बस मैं समझ गया यह किसी समय की दुआ ही है जिसका तीर निशाने पर लगा है ।" (उद्धरित हयाते नूर)

☆ ☆ ☆

123 वां
जलसा सालाना क़ादियान

दिनांक 29, 30, 31 दिसम्बर 2017 ई. को आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 123 वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए दिनांक 29, 30 और 31 दिसम्बर 2017 ई.(जुम्अ:, हफता व इतवार) की स्वीकृति दी है। जमाअत के लोग अभी से इस शुभ जलसा सालाना में उपस्थित होने की नीय्यत करके दुआओं के साथ तैयारी आरम्भ कर दें। अल्लाह तआला हम सब को इस ख़ुदाई जलसे से लाभ उठाने की क्षमता प्रदान करे। इस जलसा सालाना की सफलता व बा-बरकत होने के लिए इसी तरह यह जलसा लोगों के लिए मार्ग दर्शन हो इसके लिए विशेष दुआएँ जारी रखें। धन्यवाद

(नाज़िर इस्लाह व इरशाद मरकज़िया, क़ादियान)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

لَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْأَقَاوِيْلِ لَأَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ
(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वे कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बंधित कर देते तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह और की जान की शिरा काट देते ।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे प्राय: उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित किया गया है। किताब प्राप्त करने के लिए इच्छुक पोस्ट कार्ड/मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**
Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186
Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab
For On-line Visit : www.alislam.org/urdu/library/57.html

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad